ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 14 अंक 2 | कुल पृष्ठ-8 | 20 से 26 सितम्बर, 2018 | दयानन्दाब्द 194 | सृष्टि सम्वत् 1960853119 | सम्वत् 2075 | अ.शु.-02

वैदुष्य एवं विनम्रता के मूर्तिमान विग्रह तथा लेखनी के महाधन

डॉ. भवानीलाल भारतीय : विनम्र श्रद्धांजलि

आर्य समाज और ऋषि दयानन्द से सम्बन्धित सभी आवश्यक तथ्यों की जानकारी के स्रोत, वैदुष्य एवं विनम्रता के मूर्तिमान् विग्रह, पं. लेखराम के उत्तराधिकारी और लेखनी के महाधन प्रो. भवानीलाल भारतीय अपनी जीवन यात्रा (6 जून, 1928 – 11 सितम्बर, 2018) पूरी कर परलोक के लिए प्रस्थान कर गये। 175 पुस्तकों तथा लगभग 1500 लेखों के रचनाकार वरेण्य भारतीय जी की उल्लेखनीय कृतियाँ तथा पावन स्मृतियाँ ही अब शेष रह गई हैं। ऋषि दयानन्द के जीवन चरित से सम्बद्ध ऐतिहासिक घटनाओं और तथ्यों के साथ–साथ सभी उपादान सामग्रियों के संकलन के लिए आजीवन परिश्रमी प्रो. भारतीय का एकमात्र व्यसन पढ़ना और लिखना था। दयानन्द की जीवनी और रचनाओं के विषय में जितना भी आज तक लिखा गया है उन सबको संकलित, प्रकाशित और सुचर्चित करते रहना यही उनकी खासियत थी। आर्य समाज के सिद्धान्त और इतिहास को शोधपूर्ण रीति से पुस्तकों और पत्र–पत्रिकाओं में निरन्तर प्रस्तुत करने में उनकी सर्वाधिक रुचि थी। प्रमाद, विश्राम और थकावट उन्हें छू तक नहीं पाई थी। उनके लिए ऋषि दयानन्द और आर्य समाज ही सब कुछ (सर्वस्व) था। उनके लेखन का क्षितिज बहुत व्यापक है। वेद, उपनिषद्, दर्शन, आर्य सिद्धान्त, संस्कृत साहित्य, हिन्दी साहित्य, संस्मरण, जीवनी, आलोचना, सम्पादन और अनुवाद से लेकर आज तक के सभी आर्य लेखकों और विद्वानों के लेखकीय साहित्य का भी संग्रह और समीक्षण करना उनके ही बूते की बात थी।

विगत सात दशकों (70 वर्ष) तक फैला हुआ उनका लेखकीय व्यक्तित्व और कृतित्व किसी भी सुलेखक के लिए स्पृहा का विषय हो सकता है। देशी या विदेशी किसी भी लेखक के द्वारा स्वामी दयानन्द और आर्य समाज की की गई आलोचना उन्हें सहन नहीं होती थी और उसका तत्काल उत्तर लिखकर वे आर्य पत्रों में प्रकाशित करते थे। पं. गुरुदत्त, पं. लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, लाला लाजपत राय से लेकर पं. भगवद्दत्, गंगा प्रसाद उपाध्याय, धर्मदेव विद्यामार्त्तण्ड, युधिष्ठिर मीमांसक और स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती प्रभृति सैकड़ों आर्य विद्वानों की कृतियों से पाठकों को परिचित कराने में उनको व्यक्तिगत प्रसन्नता और गौरव की अनुभूति होती थी। आज से 50 वर्ष पूर्व 1968 ई. में उनकी पी.एच.डी. थीसीस 'ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की संस्कृत साहित्य को देन' पं. युधिष्ठिर मीमांसक की देख–रेख में छपी थी। तब से आज तक ऋषि दयानन्द और आर्य समाज से सम्बद्ध किसी का भी शोध प्रबन्ध डॉ. भारतीय या उनकी पुस्तकों की सहायता लिए बिना नहीं लिखा जा सकता है। आस्ट्रेलिया के प्रो. जार्डन्स और अमेरिकी प्रो. लेविलिन् से लेकर डॉ. प्रभा शास्त्री के शोध प्रबन्ध 'स्वामी दयानन्द के हिन्दी लेखन का साहित्यिक, भाषिक और शैलीगत अध्ययन' जैसे अधुनातन अनुसंधान–ग्रन्थ इसके प्रमाण हैं। सैकड़ों शोधार्थियों ने उनकी पुस्तकों से सामग्री संकलन की है और भावी शोधकर्मी भी डॉ. भारतीय और उनकी रचनाओं के अधमर्ण रहेंगे। संक्षेपतः ऋषि दयानन्द और आर्य समाज के इतिहास, ग्रन्थ, सिद्धान्त और विचारों के वे 'इनसाइक्लोपिडिया; (विश्वकोष) थे। लेखनी के धनी मसिजीवी डॉ. भारतीय की 175 पुस्तकों में से चुनिंदा रचनाओं का उल्लेख किये बिना यह भावांजलि अधूरी ही रहेगी। अतः भारतीय जी की कतिपय कृतियों का नाम और प्रकाशनवर्ष प्रस्तुत है :–

1. नवजागरण के पुरोधा : महर्षि दयानन्द सरस्वती, प्रथम संस्करण 1983, द्वितीय परिवर्द्धित संस्करण 2009।
2. ऋषि दयानन्द : सिद्धान्त और जीवन दर्शन, 2013।
3. स्वामी दयानन्द और अन्य भारतीय धर्माचार्य, प्र. सं. 1949, द्वि. सं. 2002।
4. महर्षि दयानन्द और राजा राममोहन राय, 1957।
5. महर्षि दयानन्द और स्वामी विवेकानन्द : तुलनात्मक अध्ययन, 1975, 1986, 1995, (उड़िया अनुवाद 1994)।
6. दयानन्द साहित्य सर्वस्व, 1983।
7. ऋषि दयानन्द के भक्त, प्रशंसक और सत्संगी, 1986।
8. महर्षि दयानन्द प्रशस्तिकाव्यम् (संस्कृत पद्य संग्रह), 1986।
9. स्वामी दयानन्द सरस्वती : व्यक्तित्व, विचार और मूल्यांकन, 2000।
10. स्वामी दयानन्द सरस्वती : पश्चिम की दृष्टि में, 2001।
11. स्वामी दयानन्द सरस्वती : सम सामयिक पत्रों में, 2003।
12. स्वामी दयानन्द सरस्वती के पत्र–व्यवहार का विश्लेषणात्मक अध्ययन, 2002।
13. ऋषि दयानन्द और आर्य समाज की संस्कृत साहित्य को देन, 1968।
14. वेदाध्ययन के सोपान, 1974।
15. वैदिक स्वाध्याय (शोधपूर्ण निबन्ध), 1992।
16. ऋग्वेदीय–यजुर्वेदीय–सामवेदीय–अथर्ववेदीय अध्यात्म शतक (प्रत्येक वेद की 100–100 ऋचाओं की भावपूर्ण आध्यात्मिक व्याख्या), 1999–2000।
17. आर्य समाज के वेद सेवक विद्वान्, 1974, 2007।
18. उपनिषदों की कथाएँ, 1983, 1995, 1996।
19. स्वामी दयानन्द के दार्शनिक सिद्धान्त, 1982।
20. विश्वधर्मकोश : सत्यार्थप्रकाश, 1978, 2002।
21. आर्य समाज के शास्त्रार्थ महारथी, 1970, 1982।
22. परोपकारिणी सभा का इतिहास, 1975।
23. आर्य समाज का अतीत और वर्तमान, 1975।
24. आर्य समाज : अतीत की उपलब्धियाँ और भविष्य के प्रश्न, 1978।
25. आर्य समाज के पत्र और पत्रकार, 1981।
26. आर्य समाज विषयक साहित्य परिचय (सन्दर्भ ग्रन्थ), 1985।
27. आर्य समाज का इतिहास (पंचम भाग – साहित्य खण्ड), 1986।
28. समग्र क्रांति का सूत्रधार आर्य समाज, 2001।
29. हिन्दी काव्य को आर्य समाज की देन, 2000।
30. भारत के नारी–जागरण में आर्य समाज की भूमिका, 2000।
31. आर्य लेखक कोश (संदर्भ ग्रन्थ), 1991।
32. जर्मनी के संस्कृत विद्वान्, 2000।
33. शुद्ध गीता, 1966।
34. श्रीमद्भगवद्गीता : एक सरल अध्ययन, 1966।
35. श्रीकृष्ण चरित, 1958, 1991, 1998।
36. ब्रह्मवैवर्त्तपुराण : एक समीक्षा, 1969।

सम्पादित महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ

37. दयानन्द दिग्विजयार्क (गोपालराव हरि शर्मा), 1974, 1983।
38. महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवनचरित्र (पं. लेखराम), 1984, 1988।
39. श्री श्रीदयानन्द चरित (सत्यबन्धु दास) बांग्ला का हिन्दी अनुवाद, 1986।
40. युगप्रवर्तक स्वामी दयानन्द (लाला लाजपत राय), 1998, 2005।
41. ऋषि दयानन्द के चार लघुजीवन चरित, 1998।
42. दयानन्द चरित, प्रथम संस्करण (देवेन्द्रनाथ मुखोपाध्याय), 2000।
43. ऋषि दयानन्द के शास्त्रार्थ और प्रवचन, 1982।
44. महर्षि दयानन्द की आत्मकथा, 1975, 1983।
45. पूना प्रवचन (उपदेश मंजरी), 1976, 1985।
46. चतुर्वेद विषय सूची (स्वामी दयानन्द सरस्वती), 1971।
47. भागवत खण्डनम् (स्वामी दयानन्द सरस्वती), 1999।

अनूदित/सम्पादित ग्रन्थ

48. आर्य समाज (लाला लाजपत राय), 1982, 1994, 2001।
49. योगिराज श्रीकृष्ण (लाला लाजपत राय), 1998।
50. लाला लाजपत राय की आत्मकथा, 2005।
51. लाला लाजपत राय ग्रन्थावली (9 खण्ड)।
52. स्वामी श्रद्धानन्द ग्रन्थावली (9 खण्ड)। इस ग्रंथावली में स्वामी श्रद्धानन्द की अंग्रेजी पुस्तक 'Inside Congress' का हिन्दी अनुवाद तथा स्वामी श्रद्धानन्द और आचार्य रामदेव की 'The Arya Samaj its Detractors : A Vindication' अंग्रेजी पुस्तक का हिन्दी अनुवाद – 'आर्य समाज और उसके निन्दक : एक प्रतिवाद' भी शामिल है।
53. मीमांसा दर्शन (उत्तरार्ध) श्री मयाशंकर शर्मा कृत मीमांसा दर्शन के गुजराती अनुवाद का हिन्दी अनुवाद।
54. सूरज बुझाने का पाप (श्री केशुभाई देसाई) गुजराती भाषा में ऋषि दयानन्द के जीवन चरित को लक्ष्य कर लिखे गये उपन्यास का हिन्दी अनुवाद, 1994 ई.।

डॉ. भारतीय ने अपनी प्रतिनिधि रचना 'नवजागरण के पुरोधा : महर्षि दयानन्द सरस्वती' (द्वितीय संस्करण, 2009 ई.) के उपसंहार में लिखा है :–

मेरी चेष्टा थी कि मेरा पुस्तक संग्रह स्वामी दयानन्द तथा उनके द्वारा स्थापित आर्य समाज विषयक ग्रन्थों, पत्र–पत्रिकाओं तथा अन्य प्रकार के दस्तावेजों का अद्वितीय संग्रह हो। मैं इस कार्य में सफल हुआ। मेरे पुस्तकालय में एतद् विषयक लगभग पांच हजार ग्रन्थ तथा पत्र–पत्रिकाओं की पांच सौ दुर्लभ फाइलें थीं।

सत्यार्थ प्रकाश के विभिन्न बाईस भाषाओं में अनुवाद, उनके अन्य ग्रन्थों के विभिन्न संस्करण, टीका, व्याख्या आदि ग्रन्थों के अतिरिक्त स्वामी जी के जीवन चरित्र बहुसंख्या (शताधिक) में थे। अब यह दुर्लभ ग्रन्थ संग्रह दण्डी विरजानन्द के स्मारक रूप में कुरुक्षेत्र में बनाये जाने वाले एक शोध ग्रन्थालय को दे दिया गया है। तथापि प्रकाशित अप्रकाशित पूरा वृत्त, दस्तावेज तथा पत्रों की कतरनें लगभग बीस वेष्टनों (बस्तों) में मेरे पास हैं, जिनका उपयोग स्वामी दयानन्द के अध्ययन तथा तद्विषयक लेखन के लिए भावी शोधकर्ताओं एवं लेखकों द्वारा किया जा सकता है।

डॉ. भारतीय जैसे मनीषी लेखकों के लिए ही संस्कृत की यह सूक्ति चरितार्थ होती है – **कीर्तिरक्षरसंयुक्ता चिरं निष्ठति भूतले।**

– डॉ. ज्वलन्त कुमार शास्त्री, प्रधान, सम्पादक, 'वैदिक पथ' मासिक, चलमाष – 9415185521

भारतीय सामाजिक जीवन का मूल आधार

– रेणु पुराणिक

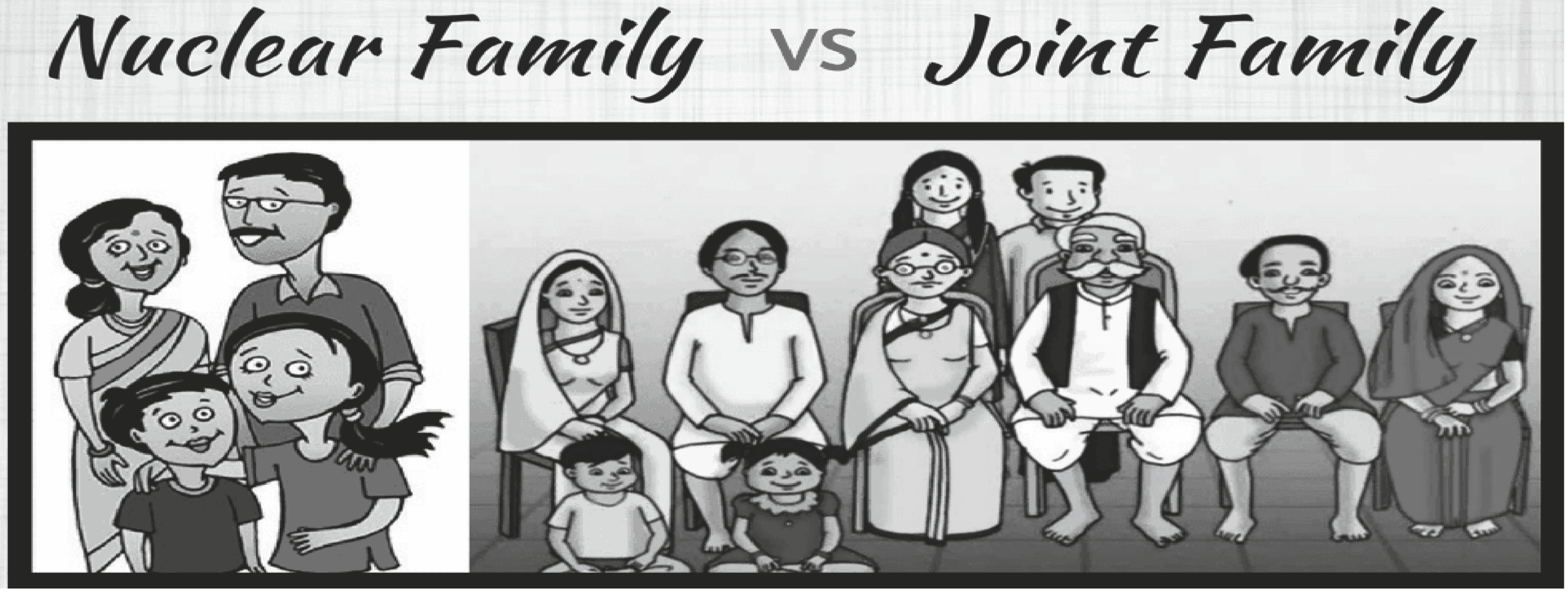

अथर्ववेदीय पृथ्वीसूक्त संसार की प्रथम रचना है, जिसमें प्रकृति और पृथ्वी के विषय में एक माँ व उसके बच्चे के परिवार की कल्पना की गई है। उस समय 'एक सद्विप्रा बहुधा वदन्ति, सर्वभूत हतो रताः। एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' जैसे महान सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया गया है। परन्तु आज संसार में भौतिकवाद और अध्यात्मवाद का परस्पर संघर्ष चल रहा है। केवल भौतिकवाद के आधार पर विश्व शांति की नींव किसी भी प्रकार से ठोस और दृढ़ नहीं हो सकती है।

परिवार व्यवस्था भारत में सामाजिक जीवन क आधार है। मानव समाज में परिवार एक बुनियाद सार्वभौमिक ईकाई है। यह सामाजिक जीव निरंतरता, एकता, विस्तार एवं विकास के आवश्यक है। हिन्दू संयुक्त परिवार पूरे भ महाद्वीप में पाया जाता है, जिसमें एक साथ, एक में कई पीढ़ियों के लोग एक साथ रहते हैं।

भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली प्राचीन काल से विद्यमान है। विभिन्न क्षेत्रों, जातियों में संयुक्त परिवार में आपको एक दूस योग्यता, अनुभव और सहयोग मिलता है। इसके साथ ही आर्थिक एवं भावनात्मक सहायता भी मिलती है, जिससे आप अपनी अनेक समस्याओं को सरलता से और सही ढंग से सुलझा पाते हैं।

आज के बदलते सामाजिक परिदृश्य में संयुक्त परिवार तेजी से टूटते और बिखरते जा रहे हैं तथा उनकी जगह एकल परिवार लेते जा रहे हैं। संयुक्त परिवार में कुटुम्ब का पूर्व पुरुष वंशज या रक्त सम्बन्धी दो या तीन पीढ़ियों के लोग साथ–साथ एक ही घर में रहते हैं। संयुक्त परिवार का व्यक्ति पहले परिवार, फिर समाज और फिर राष्ट्र का निर्माण करता है। संयुक्त परिवार एक वट वृक्ष हैं, सिसे फल एवं छाया दोनों प्राप्त होते हैं। संयुक्त परिवार में घर का वयोवृद्ध व्यक्ति वह कार्य निवृत्त हो या न हो, वह परिवार का कर्ता–धर्ता या मुखिया माना जाता है। कहीं–कहीं इनको मालिक या स्वामी भी कहा जाता है। वह परम्परा के आधार पर परिवार में कार्य का विभाजन, उत्पादन, उपभोग आदि की व्यवस्था करता है तथा परिवार के अन्य सदस्यों से सम्बन्धित सामाजिक महत्त्व के कार्य और कार्य की पद्धति का निर्णय करता है। इसी प्रकार घर में वयोवृद्ध महिला परिवार की मुखिया होती है। वह परिवार के आन्तरिक कार्य जैसे भोजन तैयार करना, बच्चों की देखभाल करना, बच्चों की शिक्षा–दीक्षा–संस्कार की व्यवस्था करना, इसके अतिरिक्त अन्य घरेलू कार्यों को सुचारू रूप से करने के लिए परिवार की महिलाओं में कार्य का विभाजन करती है तथा परिवार के सभी सदस्यों की आवश्यकतानुसार उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु प्रयास करती है। इनके द्वारा सामाजिक, सांस्कृतिक विरासत एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित होती है। व्यक्ति की सामाजिक महत्ता परिवार से ही निर्धारित होती है।

विभिन्न प्रदेशों और भिन्न–भिन्न कालों में यद्यपि रचना, आकार, सम्बन्ध और कार्य की गति आदि अलग–अलग होने के कारण इनकी कार्य पद्धति और आचार–व्यवहार की दृष्टि से परिवार में अनेक भेद होते हैं। परन्तु यह उपयुक्त कार्य सर्व–देशिक और

भारतीय समाज में संयुक्त परिवार प्रणाली बहुत प्राचीन काल से विद्यमान है। विभिन्न क्षेत्रों, धर्मों, जातियों में संयुक्त परिवार में आपको एक दूसरे की योग्यता, अनुभव और सहयोग मिलता है। इसके साथ ही आर्थिक एवं भावनात्मक सहायता भी मिलती है, जिससे आप अपनी अनेक समस्याओं को सरलता से और सही ढंग से सुलझा पाते हैं।

परिवार के आदर्श, परम्परायें और प्रतिष्ठा के कारण इनका सम्पत्ति के अधिकारों का व्यवहारिक पक्ष परिवार के संयुक्त रूप के अनुकूल ही होता है। संयुक्त परिवार भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के अतिरिक्त प्राचीन रीति–रिवाज, परम्परा और आदर्श में निहित है।

वंशावली, स्वामित्त्व और शासनाधिकार के विभिन्न रूपों के आधार पर परिवार के भिन्न–भिन्न रूप और प्रकार हो जाते हैं। पितृवंशीय परिवार में पत्नी पति के घर आकर रहती है। पितृवंशीय परिवार की संपत्ति का स्वामित्व पितृ स्थानीय परिवार का पुरुष होता है। भारत के अधिकांश भागों और समाजों में पितृवंशीय परिवार का पुरुष ही घर का शासक एवं स्वामी रहता है तथा घर के अहम निर्णय भी वही करता है। पितृसत्तात्मक व्यवस्था में पुरुष की प्रधानता पाई जाती है।

मातृवंशीय परिवार में महिला घर की मुखिया होती है। प्रायः संपत्ति का उत्तराधिकारी ज्येष्ठ संतान होती है, किन्तु यह आवश्यक नहीं है। भारत के कुछ भागों के समाजों में मातृवंशीय परम्परा रही है। भारत के मालाबार प्रदेश में नायर और तिया जाति के मातृसत्तात्मक मातृवंशीय परिवार रहते हैं। परिवार में पति अपने बच्चों के घर में एक अस्थाई आगंतुक होता है। उसके बच्चों की देखभाल उसका मामा करता है और बच्चे अपनी मां के परिवार का नाम ग्रहण करते हैं। परिवार पूर्णरूप से संयुक्त रहता है, जिसमें मां की पुत्री अथवा पौत्री की संतान रहती है। परिवार का मुखिया मातृवंशीय पुरुष रहता है।

असम राज्य के गारों और खासी जनजातियों में मातृवंशीय और मातृस्थानीय परिवार की प्रथा है। यहां पुत्रियां मां की चल व अचल सम्पत्ति की उत्तराधिकारी होती हैं।

समाजों के परिवर्तनों के साथ, स्थान की भौगोलिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियों ने परिवार को प्रभावित किया है। सदस्यों की संख्या, विवाह का स्वरूप, सक्ता, निवास, वंशवाद के आधारों पर परिवार को अनेक प्रकार से वर्गीकृत किया गया है। परिवार सामाजिक संस्थाओं में सबसे महत्त्वपूर्ण एवं पी सामाजिक संस्था है। यह सभी समाजों की भूत ईकाई है। परिवार एक ऐसा सामाजिक समूह व्यक्ति की अपेक्षा व्यक्ति की योग्यता के महत्त्व र्धारण करता है। सामान्यतः परिवार महिला पुरुष ाहिक सम्बन्ध से बनता है। बुनियादी रूप से बच्चे को जन्म देने की क्रिया को वैद्य बनाता है। से बच्चों को ऐसा पहला सामाजिक परिवेश है, जिससे वे अपने समाज और संस्कृति को ा आरम्भ करते हैं।

र्तमान में परिवार की व्याख्या बदल गई है। परिवार के स्थान पर एक परिवार के चार परिवार बन गये हैं। पहले परिवार में कम से कम 8–10 सदस्य रहते थे, परन्तु आज एकल परिवार में तीन या चार सदस्य ही रहते हैं। औद्योगिकरण, शहरीकरण और वैश्वीकरण की वजह से होने वाले परिवर्तनों के कारण बढ़ी हुई दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु महिलाएं भी अर्थार्जन के लिए घर से बाहर जाने लगी है। भारतीय जीवनशैली के तरीके बदलने से परिवार का विघटन तेजी से बढ़ रहा है। पाश्चात्य जीवनशैली, पाश्चात्य विचार–व्यवहार, शिक्षा–दीक्षा तथा उनके आदर्शों ने भारतीय परिवारों को नष्ट कर दिया है। कारण, पाश्चात्य संस्कृति में परिवार होते ही नहीं हैं। परन्तु आज विदेशों में परिवारों का महत्त्व बढ़ रहा है और वे लोग परिवार में रहना चाहते हैं।

परिवार, समाज का घटक है। यदि परिवार में स्थिरता होगी तो समाज व्यवस्था दृढ़ होगी। समाज स्थिर होगा तो राष्ट्र सुदृढ़ होगा। परिवार में स्थायित्व महिला के कारण ही आता है। फिर वह गृहणी हो या चाहे अर्थार्जन करने वाली। वह समन्वयक की भूमिका निर्वाह करती है। पर्याय रूप में वह समाज व्यवस्था बनाये रखने में महान उत्तरदायित्व सहजता से निभाती है। महिलाओं को परिवार की धूरी माना जाता है। अतः वर्तमान समय में महिलायें ही सजगता एवं सहनशीलता से परिवार को अपनत्व और दृढ़ता प्रदान करती हैं तथा परिवार को बिखरने से बचाने का प्रयास करती है।

''महिला परिवार की नींव का पत्थर है,
महिला जगत की धूरी है,
महिला के बिना, सृष्टि अधूरी है।''

मानव जीवन में योग के मूल्य एवं विभिन्न आयाम

– डॉ. रघुवीर वेदालंकार

उक्त विषय पर विचार करने से पूर्व हमें यह जान लेना चाहिए कि योग क्या है? इसे यदि संक्षेप में कहा जाये तो यही कहेंगे कि योग समग्र जीवन दर्शन है। यह एक ऐसी सुसंयमित एवं परिमार्जित जीवन पद्धति है जिसे अपनाकर व्यक्ति न केवल स्वयं ही दुःख मुक्त होता है, अपितु अन्य प्राणियों को भी सुखी कर देता है। पतंजलि के 'योगश्चितवृत्तिनिरोधः' की व्याख्या में व्यास जी लिखते हैं – योगः समाधिः। यह समाधि क्या है? निश्चित रूप में योग दर्शन में यह योग का अन्तिम अंग है। हम यहाँ इस समाधि की चर्चा नहीं करेंगे।

मानव जीवन के प्रसंग में समाधि की यह व्याख्या उपयुक्त होगी। समाधिः समाधानम्। किसका समाधान? समस्याओं का। योग वस्तुतः मानव जीवन, समाज एवं राष्ट्र की समस्याओं का समाधान है। चाहे व्यक्ति हो या समाज, आज सभी कोई समस्याओं से ग्रस्त है। समस्याएँ भी विभिन्न प्रकार की हैं। आज मानव एवं समाज दोनों का ही चित्त प्रसन्न नहीं है, शान्त नहीं है। क्षिप्त, विक्षिप्त एवं मूढ़ अवस्था में वह इधर–उधर भटक रहा है। इसलिए बेचैन एवं तनावग्रस्त है। काम, क्रोध, लोभ, भय, मत्सर, राग–द्वेष आदि विकार व्यक्ति एवं समाज दोनों के जीवन में व्याप्त है। योगमार्ग इनसे मुक्ति दिलाकर चित्त को प्रसन्नता प्रदान करता है। योग द्वारा प्रदत्त यह प्रसन्नता स्थाई है तथा चित्त को शांति एवं स्वास्थ्य प्रदान करने वाली है। वह चित्त चाहे व्यक्ति का हो या समाज का, प्रक्रिया दोनों की समान है।

जीवन में योग के लाभ

1. चित्त प्रसादनम् :– पतंजलि मुनि कहते हैं – मैत्रीकरुणामुदितोपेक्षाणां सुख – यो. सू. 1.33 दुःखपुण्यापुण्यविषयाणांभावनातश्चित्तप्रसादनम्।

राग–द्वेष, ईर्ष्या, मत्सर से ग्रस्त व्यक्ति के मन में मैत्री, करुणा आदि का उदय हो ही नहीं सकता क्योंकि इसका चित्त दोषों से दूषित है, विकृत है। इसका शोधन योग की प्रक्रिया से ही सम्भव है। सामाजिक तथा राजकीय दण्ड भी व्यक्ति को राग–द्वेष रहित करके उसके मन में मैत्री, करुणा आदि का उदय नहीं कर सके।

योग केवल विरक्त संन्यासियों का धर्म नहीं, अपितु यह संसार में रहने वाले प्रत्येक सांसारिक मानव की जीवन साधना है। वह व्यक्ति चाहे किसी भी वर्ण या आश्रम का क्यों न हो, इसे अपनाना उसके लिए अनिवार्य है, क्योंकि श्रेयस् का यही मार्ग है। इसके विपरीत दुःख का, विषाद का मार्ग है। युद्धक्षेत्र में पराक्रमी अर्जुन इसी राग भावना से तो संयुक्त हो गया था जिसके प्रति भी यह आसक्ति=प्रेम=प्रादुर्भूत हो जायेगा, व्यक्ति उसके सामने हथियार डाल देगा, चाहे उसके सामने उसका शत्रु तथा विरोधी भी क्यों न हो। इसीलिए भगवान कृष्ण अर्जुन को बार–बार कहते हैं, जबकि क्षत्रिय राग–द्वेष से ऊपर उठकर केवल कर्त्तव्य मात्र परायण हो। यदि व्यक्ति इस धर्म का पालन करने लगे तो इससे वह स्वयं भी सुखी होगा तथा समाज को भी सुखी करेगा।

(2) बुरी वृत्तियों का शमन :– प्रत्येक व्यक्ति के मन में अच्छी तथा बुरी वृत्तियों का द्वन्द्व चलता रहता है। इसी को देवासुर संग्राम भी कहा जाता है। क्रोध, असत्य हिंसा आदि की वृत्तियाँ व्यक्ति के मन में उदित होती ही रहती हैं। उसके दो कारण है। प्रथम यह कि इन्द्रियों का स्वभाव ही यह है कि वे विषयों की ओर भागती हैं। विषयों के कारण ही मन में हिंसा, काम, क्रोध, लोभ आदि की वृत्तियाँ उदित होती रहती हैं। दूसरा कारण यह कि कोई भी प्राणी जब हमारे साथ दुर्व्यवहार या हमारा अहित करता है तो उस समय उसके प्रति हमारे मन में प्रतिहिंसा, क्रोध, अहंकार आदि के भाव जग जाते हैं। अतः हम उनके अधीन होकर ही कार्य करने लगते हैं। पतंजलि मुनि इन वितर्कों से छूटने का उपाय बतलाते हुए कहते हैं कि वितर्कों का उदय होने पर इनके प्रतिपक्ष की भावना करनी चाहिए। पतंजलि प्रतिपक्ष भावना का स्वरूप भी समझा देते हैं कि ये वितर्क अनन्त दुःख तथा अज्ञान के उत्पादक हैं। प्रतिपक्ष की भावना यही है कि यदि मैं हिंसा आदि का आश्रय लूंगा तो मुझे दुःखों की अग्नि में तपना पड़ेगा। इस प्रकार परिणाम को सोच कर व्यक्ति हिंसा आदि से उपरत हो सकता है।

(3) जीवन का नियंत्रण :– आजकल कुछ लोग विविध प्रकार के आसनों को ही योग/योगा मानने लगे हैं तथा कुछ लोग सीधे ही ध्यान में प्रवेश का यत्न करते हैं। ये दोनों ही योग नहीं हैं। पतंजलि का योग यम–नियमों से प्रारम्भ होता है तथा ये दोनों योग के अपरिहार्य अंग हैं। इनके द्वारा न केवल व्यक्ति का ही, अपितु पूरे समाज का जीवन नियंत्रित होता है तथा वहां सुख–शांति आनन्द का संचार होता है।

आज का व्यक्ति/समाज भोगों में आकण्ठ डूबा है। इनके लिए उसने नाना एषणाएं मन में पाल रखी हैं। इनके लिए ही वह नाना दुष्कर्म करता है। चोरी, छीना–छपटी, असत्य भाषण, हिंसा, खाद्य पदार्थों में मिलावट, बलात्कार, रिश्वत ये सभी व्यक्ति की तृष्णा के शमनार्थ ही हैं। आज एक धनी व्यक्ति को भी अपने धन पर संतोष नहीं है। तृष्णा के वशीभूत वह इसे अधिकाधिक करना चाहता है तथा इसके लिए अनुचित मार्गों को भी अपनाता है। परिणामस्वरूप समाज में अपराध बढ़ते रहते हैं। योग का संतोष नामक नियम तृष्णा पर ही प्रहार करता है। पतंजलि इसका फल अनुत्तम सुख की प्राप्ति बतलाते हैं। यदि व्यक्ति तथा समाज इस संतोष नामक नियम का पालन करने लगे तो समाज के आधे अपराध अपने आप कम हो जायेंगे। यहाँ पर व्यास जी एक श्लोक भी उद्धृत करते हैं कि संसार के समस्त दिव्य सुख भी तृष्णा क्षय रूपी सुख के सोलहवें हिस्से के भी बराबर नहीं है। इसी प्रकार यमों के अन्तर्गत अपरिग्रह है। इसका पालन करके व्यक्ति अनाप–शनाप धन तथा विलास का सामान एकत्रित करने से बच जायेगा। व्यास जी अपरिग्रह को स्पष्ट करते हुए कहते हैं कि विषयों के अर्जन, रक्षण, क्षय, संग तथा हिंसा आदि दोषों के कारण विषयों को स्वीकार न करना ही अपरिग्रह है।

इन दोषों को न देखने के कारण ही हम विषयों के अर्जन, रक्षण तथा सेवन में लगे रहते हैं। यदि समाज ने अपरिग्रह का पाठ पढ़ा होता तो वह आज सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर भ्रष्टाचार तथा नाना घोटालों में न डूबा होता। घोटालों के समान ही स्त्रियों का अपहरण, बलात्कार तथा उनकी हत्या यह आज का राष्ट्रव्यापी रोग है। सरकारी कानून इतने शिथिल हैं कि वे व्यक्ति के इन दुष्कर्मों के निवारण में असमर्थ हैं। जनसंख्यावृद्धि भी आज की मुख्य समस्या है जिसके नियंत्रण के लिए सरकार प्रचार माध्यमों में पर्याप्त धन व्यय कर रही है। इन दोनों समस्याओं पर ब्रह्मचर्य अकेला ही नियंत्रण कर लेगा। किन्तु सरकार तो ब्रह्मचर्य के स्थान पर गर्भ निरोध के विविध उपायों का ही प्रचार कर रही है। इससे जनता में विषय प्रवृत्ति ही बढ़ रही है। लाभ कुछ नहीं। वाचस्पति मिश्र यह भी कहते हैं कि उपस्थेद्रिय के समान अन्य इन्द्रियों को विषयों से रोकना भी ब्रह्मचर्य के अन्तर्गत ही है।

इसी प्रकार अन्य यम–नियम भी हैं जो हमारे व्यक्तिगत जीवन तथा समाज को पूर्ण नियंत्रित एवं शुद्ध कर देंगे। नियमों में शौच नामक प्रथम नियम ही पर्याप्त महत्त्वपूर्ण है। व्यास जी शौच के बाह्य तथा आन्तरिक दो भेद करते हुए कहते हैं कि मिट्टी जल आदि से बाहर की शुद्धि अभक्ष्य पदार्थों का न खाना बाह्य शौच हैं तथा चित्त के मलों का क्षालन आभ्यन्तर शौच है। यदि समाज केवल इस शौच नामक नियम को ही अपना ले तो वह उपद्रवों तथा भ्रष्टाचार से रहित होकर पूर्णतः शुद्ध हो जायेगा। हमारा चितः नाना वासनाओं से मलिन है। इसीलिए हम व्यक्तिगत, सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर नाना प्रकाार के अपराध एवं भ्रष्टाचार करते हैं। पतंजलि कहते हैं कि चित्त की इस अशुद्धि के नाश का सशक्त साधन योग ही है। इससे चित्त की अशुद्धि दूर होने पर ज्ञान का प्रकाश होता है।

क्लेश मुक्ति :– संसार में अधिकांश व्यक्ति क्लेशों या दुःखों से पीड़ित हैं। कहीं इनका विभाजन आध्यात्मिक, आधिदैविक तथा आधिभौतिक रूप में किया गया है तो कहीं अन्य रूप में पतंजलि अविद्या अस्मिता आदि के रूप में इनका विभाजन करते हैं। योग दर्शन का लक्ष्य इन क्लेशों की निवृत्ति है। क्लेशों के रहते हुए व्यक्ति सुखी नहीं हो सकता। क्लेशों की निवृत्ति केवल योग मार्ग से ही सम्भव है। क्लेशों की निवृत्ति होने पर व्यक्ति इसी जन्म में मुक्त हो जाता है। हमारे जीवन में दुःख कब उत्पन्न होता है? तभी, जबकि हमें अप्रिय पदार्थ की प्राप्ति तथा प्रिय पदार्थ का वियोग होता है। अभीष्ट एवं प्रिय पदार्थों को प्राप्त करके हम प्रसन्न एवं सुखी होते हैं तथा उनके वियोग में कष्ट का अनुभव करते हैं। पतंजलि तो कहते हैं कि ये सभी पदार्थ परिणाम, ताप, संस्कार तथा उनके बचने का उपाय करता है। यह उपाय योग द्वारा ही सम्भव है। पतंजलि तथा उनके भाष्यकार व्यास देव जी स्पष्ट घोषणा कर रहे हैं कि विषयों के सेवन से सुख नहीं मिल सकता। भोगों को भोगते हुए उनके प्रति राग बढ़ता ही जाता है। यही राग दुःख का कारण है। योग साधना से इसी राग को नष्ट किया जाता है।

न केवल राग को ही, अपितु योगमार्ग के द्वारा अविद्या आदि पांचों क्लेशों को समूल नष्ट किया जाता है। वस्तुतः ये सभी क्लेश अविद्या आदि के ही भेद हैं। योगमार्ग अविद्यानाश एवं ज्ञानदीप्ति का एक मात्र साधन है। पतंजलि अविद्या का यही स्वरूप बतलाते हैं कि अनित्य, अशुद्धि, दुःख तथा अनात्म में इनके विपरीत बुद्धि रखना ही अविद्या है। हम सभी इस अविद्या से ग्रस्त हैं। इसीलिए दुःखी हैं। योग दर्शन अविद्या के मूल पर ही प्रहार करता है।

मन की एकाग्रता :– यद्यपि योग का लक्ष्य उसका अन्तिम अंग समाधि है, तथापि समाधि से पूर्ववर्ती धारणा एवं ध्यान ये दोनों अंग समाधि का सोपान तो हैं ही, इसके अतिरिक्त व्यक्ति के मन तथा जीवन में भी आमूल चूल अपरिवर्तन कर देने वाले हैं। धारणा एवं ध्यान के द्वारा मन पर नियंत्रण होता जाता है तथा स्वतः ही बुरी वृत्तियों का नाश होने लगता है। जिस प्रकार गन्दे जल में क्लोरिन या अन्य शोधक दवाई डालने से जल स्वतः ही शुद्ध होने लगता है, उसी प्रकार चित्त को ध्यान परायण कर देने पर स्वतः ही वहाँ से कुसंस्कार एवं दूषित वृत्तियाँ तिरोहित होने लगती हैं। तिहाड़ जेल (दिल्ली) में कैदियों पर किये गये विपश्यना के प्रयोगों ने इस बात को प्रमाणित कर दिया है कि बुरी वृत्तियों के विनाश में ध्यान अति उपयोगी है। यदि प्रत्येक मानव प्रतिदिन नियमित ध्यान करने लगे तो इससे उसका जीवन स्वतः ही नियमित तथा परिष्कृत हो जायेगा।

इस प्रकार ध्यान का व्यवहारिक जीवन में भी बहुत महत्त्व है। अनुभव में यह आया है कि ध्यान से श्वास सूक्ष्म होने लगता है तथा इसके साथ ही कुत्सित वृत्तियाँ भी समाप्त होने लगती हैं। ध्यानी व्यक्ति कभी भी कुपथगामी नहीं हो सकता। वह भ्रष्टाचार, अनाचार तथा परहित नहीं कर सकता। सामाजिक क्षेत्रों में योग की यह अदभुत उपलब्धि है। जिस व्यक्ति को दण्ड या अन्य किसी भी साधन से सुपथ पर कहीं लाया जा सकता है। उसे योगमार्ग से नियंत्रित किया जा सकता है। इसके साथ व्यक्ति के तनाव, चिन्ता आदि मानसिक विकार भी सर्वथा दूर हो जाते हैं। योग इन्हें नष्ट करने का सशक्त साधन है।

इस प्रकार संक्षेप में कहा जा सकता है कि सब कुछ करते हुए, सब कुछ खाते–पीते हुए योग के नाम पर कुछ आसन या केवल धारणा/ध्यान कर लेने मात्र का नाम योग नहीं है, अपितु योग एक समग्र जीवन पद्धति है। यह एक ऐसा मार्ग है जो हमें उत्तम जीवन जीने की कला सिखाता है, रोग, शोक, राग–द्वेष आदि से मुक्त होकर सर्वदा प्रसन्न एवं शान्त रहने की कला सिखलाता है। योग के आठों भागों का सेवन ही योग है। योगी व्यक्ति का जीवन सुसंयमित, परिमार्जित तथा आनन्द पूर्ण होता है। योग जीवन की आवश्यकता है, अपरिहार्यता है तथा सम्पूर्णता है।

– बी.–266, सरस्वती विहार, दिल्ली–34
मो.:– 9868144317

नारी सशक्तीकरण – बनाम अशक्तीकरण

– आकांक्षा यादव

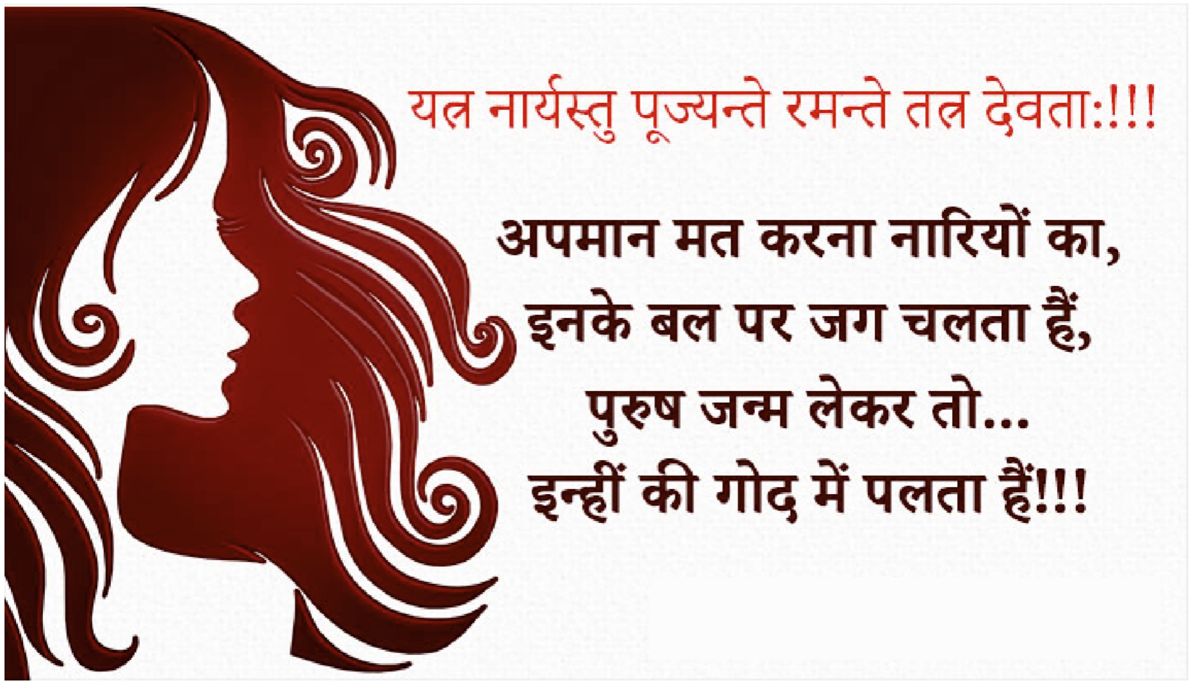

राजनीति और प्रशासन दो ऐसे क्षेत्र हैं जो न सिर्फ नीति निर्माण करते हैं बल्कि उनका कार्यान्वयन भी सुनिश्चित करते हैं। यह पहली बार हुआ है जब भारतीय राजनीति में महिलाएँ शीर्ष पर स्थान बनाने में कामयाब हुई हैं। राष्ट्रपति प्रतिभा पाटिल (पूर्व), लोकसभा अध्यक्ष मीरा कुमार, यूपीए अध्यक्ष सोनिया गाँधी, विदेश मंत्री सुषमा स्वराज, रक्षामंत्री निर्मला सीतारमण के साथ–साथ राजधानी दिल्ली में शीला दीक्षित, उत्तर प्रदेश में मायावती, पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी, तमिलनाडु में जयललिता, बिहार में राबड़ी देवी, राजस्थान में वसुन्धरा राजे इत्यादि महिलाएँ मुख्यमंत्री पद पर आसीन हैं या हो चुकी हैं। प्रशासनिक स्तर पर भी देखें तो महिलाएँ अहम पदों पर पदस्थ हैं। आई.ए.एस. की परीक्षा में जहाँ महिलाओं ने शीर्ष स्थान हासिल किए हैं, वहीं सी.बी.एस.ई. द्वारा घोषित 10वीं व 12वीं के नतीजों में प्रायः हर साल लड़कियाँ ही बाजी मारती हैं। भारत में हर साल 1.25 महिलाएँ डॉक्टर की डिग्री प्राप्त करती हैं जो कि कुल उत्तीर्ण छात्रों का पचास प्रतिशत है। भारत की 6.38 लाख पंचायतों में से 77210 की अध्यक्षता महिलाएँ कर रही हैं। एक लम्बे समय बाद ही देश के सर्वोच्च न्यायालय में भी महिलाओं की भागीदारी दिख रही है। कॉरपोरेट जगत् में भी तमाम महिलाएँ शीर्ष पदों पर हैं।

एक तरफ प्रधानमंत्री कन्या भ्रूण हत्या को राष्ट्रीय शर्म बताते हैं, वहीं कन्या, भ्रूण से लेकर अंतिम समय तक पिस रही है। यदि कन्या भ्रूण ने जन्म ले भी लिया तो उनके सम्मान में होता खिलवाड़, दहेज उत्पीड़न, बलात्कार की दर्जनों घटनाएँ अपनी नाक की खातिर माँ–बहन–बेटी की हत्या और बूढ़ी माँ को दर–दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ देना आम बात हो गई है। आज भी किसी अपराध से सबसे आसान मोहरा महिलाएँ ही होती हैं। उनके साथ दुर्व्यवहार, दुष्कर्म व छेड़छाड़ आम बात है। आंकड़े बताते हैं कि पेशेवर अपराधियों से भी ज्यादा गली–मुहल्ले, पड़ोस में कुंठित युवक व अधेड़, स्त्री सम्बन्धी अपराधों के सूत्रधार हैं। घरेलू हिंसा व कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न के संदर्भ में इन्टरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वूमेन, अमेरिका और इंस्टीट्यूट प्रोमुंडीन, ब्राजील द्वारा संयुक्त रूप से किया गया अध्ययन बताता है कि अपनी जिन्दगी में कभी न कभी 24 फीसदी भारतीय पुरुष यौन हिंसा को अंजाम देते हैं, सिर्फ 17 फीसदी भारतीय पुरुष ऐसे कहे जा सके हैं कि जो समानता मूलक सम्बन्धों के हिमायती हैं।

उपरोक्त स्थिति देखकर किसी को भी भ्रम हो सकता है कि भारत में नारी सशक्तीकरण चरम पर है और महिलाएँ न सिर्फ घर चला सकती हैं बल्कि देश भी चला रही हैं। पर क्या वाकई ऐसा है या यह उपस्थिति प्रतीकात्मक मात्र है।

राजनीतिक स्तर पर ऊपरी तौर पर भले ही महिला प्रतिनिधित्व एक गुलाबी तस्वीर पेश करता है पर असलियत यह है कि भारत में लोकसभा में महिलाओं को सिर्फ 11 फीसदी और राज्यसभा में 10.7 फीसदी प्रतिनिधित्व है। अन्तर्राष्ट्रीय समूह इण्टर पार्लियामेंटरी यूनियन आई.पी.यू. जनवरी, 2014 में जारी किए गये आंकड़ों के अनुसार भारत का राजनीति में महिलाओं की भागीदारी के मामले में 98वाँ स्थान है। यहाँ आखिर यूँ ही 33 फीसदी आरक्षण की माँग नहीं हो रही है। समाज के दलित–पिछड़े वर्ग से आने वाली महिला प्रतिनिधियों के साथ कैसा व्यवहार होता है, किसी से नहीं छुपा है। बिहार में मुसहर जाति की एक सांसद को टी.टी. ने ट्रेन के वातानुकूलित कोच से परिचय देने के बावजूद इसलिए बाहर निकाल दिया क्योंकि वह वेशभूषा से वातानुकूलित कोच में बैठने लायक नहीं लगती थी।

भारत में महिलाओं की स्थिति क्या है, इस सम्बन्ध में जनगणना 2011 के आंकड़े साबित करते हैं कि आज भी लिंगानुपात 940 है अर्थात् 1000 पुरुषों पर मात्र 940 महिलाएँ। आखिर हम इस तथ्य की अवहेलना क्यों करते हैं कि नारी के अस्तित्व पर ही सृष्टि का अस्तित्व टिका हुआ है। अकेले पुरुष से दुनिया को नहीं चलाया जा सकता। यही कारण है कि लिंगानुपात में बढ़ते फासले का असर देश के कुछ इलाके में दिख भी रहा है, जहाँ लड़कों को शादी में परेशानी आ रही है। यह उसी पुरुष मानसिकता का हश्र है, जिस पर हम गर्व करते रहे हैं। कन्या जन्म के नाम पर परिवार में मातम अभी भी आम बात है। लड़कियों को गर्भ में ही या पैदा होते ही मार देने की घटनाएं बढ़ी हैं। 6 साल तक की आबादी में इस समय 1000 लड़कों के मुकाबले सिर्फ 914 लड़किया ही हैं, जो कि 2001 में 929 थीं। आज भी हरियाणा और पंजाब जैसे राज्य में यह स्थिति भयावह है। भारत में साल भर में 290000 बेटियां कोख में ही मार ी जाती हैं और इसके लिए बाकायदा लगभग 450 करोड़ रुपये का भ्रूण हत्या का कारोबार चल रहा है।

एक नए अध्ययन में यह बात सामने आई है कि संतान के रूप में एक लड़की होने के बाद यदि गर्भ में दूसरी भी लड़की आ जाती है तो ऐसे भ्रूण की हत्या करवाने की प्रवृत्ति भारत में तेजी से बढ़ रही है। प्रतिष्ठित लैसेट पत्रिका में प्रकाशित होने वाले इस अध्ययन के निष्कर्षों के अनुसार 1980 से 2010 के बीच इस तरह के गर्भपातों की संख्या 42 लाख से एक करोड़ 21 लाख के बीच है। सबसे बड़ी विडम्बना तो यह है कि यह कृत्य उन परिवारों में अधिक देखा गया, जिन्हें सुशिक्षित एवं समृद्ध माना जाता है। गरीब व अशिक्षित व्यक्ति तो बच्चों को ईश्वरीय नियति मानकर शान्त रह जाता है पर तथाकथित सुशिक्षित सम्पन्न एवं संभ्रान्त लोग अवैध होने के बावजूद पैसों के दम पर न सिर्फ प्रसव पूर्व लिंग जांच करा रहे हैं, बल्कि कन्या भ्रूण होने पर उसे गर्भ में ही खत्म कर देने से गुरेज भी नहीं करते हैं। ऐसी प्रवृत्ति आमतौर पर पहली संतान के लड़की होने के मामलों में देखी जाती है। 1980 के दशक में कन्या भ्रूण का चुनिन्दा गर्भपात 0.20 लाख था जो 1990 के दशक में बढ़कर 12 लाख से 40 लाख तथा 2000 के दशक में 31 लाख से 60 लाख तक हो गया। यदि कोई महिला इसका विरोध भी करना चाहे तो उसे तवज्जो नहीं मिलती। वैसे भी धर्म और संस्कृति के सहारे पितृसत्ता स्त्री के एक स्वतंत्रचेता व्यक्तित्व होने की संभावनाओं को नष्ट कर रही है। हिन्दू समाज में उसी स्त्री को आदर्श माना गया जो मनसा–वाचा–कर्मणा पति की अनुगामिनी रही है। भारत ही नहीं अमेरिका में भी भारतीय मूल की महिलाएं पुत्र की चाह में खूब कन्या भ्रूण हत्या करवा रही हैं। खास बात यह है कि भारत के विपरीत अमेरिका में लिंग निर्धारण करवाना कानूनन वैध है। यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया द्वारा सितम्बर 2004 से दिसम्बर 2009 के बीच लिंग निर्धारण परीक्षण करवाने वाली प्रवासी भारतीय महिलाओं पर हुए शोध में यह बात सामने आई कि 40 प्रतिशत महिलाओं ने यह जानने के बाद कि उनके गर्भ में कन्या पल रही है, गर्भपात करवा दिया।

एक तरफ प्रधानमंत्री कन्या भ्रूण हत्या को राष्ट्रीय शर्म बताते हैं, वहीं कन्या, भ्रूण से लेकर अंतिम समय तक पिस रही है। यदि कन्या भ्रूण ने जन्म ले भी लिया तो उनके सम्मान में होता खिलवाड़, दहेज उत्पीड़न, बलात्कार की दर्जनों घटनाएँ अपनी नाक की खातिर माँ–बहन–बेटी की हत्या और बूढ़ी माँ को दर–दर की ठोकरें खाने के लिए छोड़ देना आम बात हो गई है। आज भी किसी अपराध से सबसे आसान मोहरा महिलाएँ ही होती हैं। उनके साथ दुर्व्यवहार, दुष्कर्म व छेड़छाड़ आम बात है। आंकड़े बताते हैं कि पेशेवर अपराधियों से भी ज्यादा गली–मुहल्ले, पड़ोस में कुंठित युवक व अधेड़, स्त्री सम्बन्धी अपराधों के सूत्रधार हैं। घरेलू हिंसा व कार्यस्थलों पर यौन उत्पीड़न के संदर्भ में इन्टरनेशनल सेंटर फॉर रिसर्च ऑन वूमेन, अमेरिका और इंस्टीट्यूट प्रोमुंडीन, ब्राजील द्वारा संयुक्त रूप से किया गया अध्ययन बताता है कि अपनी जिन्दगी में कभी न कभी 24 फीसदी भारतीय पुरुष यौन हिंसा को अंजाम देते हैं, सिर्फ 17 फीसदी भारतीय पुरुष ऐसे कहे जा सके हैं कि जो समानता मूलक सम्बन्धों के हिमायती हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के मुताबिक भारत में प्रति 51वें मिनट पर एक बलात्कार और हर 1202वें मिनट पर एक दहेज हत्या होती है। देश में बलात्कार के मामले 2005 में 18349 के मुकाबले बढ़कर 2009 में 22000 हो गए। महिलाओं के उत्पीड़न के मामले भी इस अवधि में 34000 से बढ़कर 39000 हो गए जबकि दहेज हत्याओं के मामले 2005 में 6000 के मुकाबले 2009 में 9000 हो गए। यही नहीं विश्व की सर्वाधिक बाल वेश्यावृत्ति भी भारत में है, जहाँ 4 लाख से अधिकतर लड़कियाँ हैं।

कहते हैं कि सामाजिक व आर्थिक विकास में शिक्षा की अहम भूमिका है, पर यहाँ तो शिक्षित परिवार अभी भी रूढ़ियों से ग्रस्त नजर आता है। आज हर क्षेत्र में महिलाएँ पुरुषों से कदम से कदम मिलाकर चल रही हैं और घर के साथ–साथ बाहरी दुनिया से भी तालमेल बनाए हुए हैं। इसके बावजूद बेटियों को पराया समझना, शादी के लिए बोझ समझना, वंशवृद्धि से लेकर चिता में अग्नि देने जैसी तमाम परम्पराओं का वाहक मात्र बेटों को समझना आम बात है। अभी भी नारी–शिक्षा परिवार की प्राथमिकताओं में शामिल नहीं है, तभी तो देश की छियासी प्रतिशत बेटियाँ प्राथमिक स्तर पर ही स्कूल (पढ़ाई) छोड़ देती हैं और चौसठ फीसदी लड़कियाँ विवाह के लिए निर्धारित 18 वर्ष की आयु पूरी करने से पहले ही ब्याह दी जाती हैं और इनमें से 22 फीसदी तो इस अपरिपक्व उम्र में ही माँ भी बन जाती हैं। मध्य प्रदेश में 73 फीसदी लड़कियाँ 18 साल से पहले ब्याह दी जाती हैं, जबकि आन्ध्र प्रदेश में यह आंकड़ा 71 फीसदी, राजस्थान में 68 फीसदी, बिहार में 67 फीसदी और उत्तर प्रदेश में 64 फीसदी है। दिन भर सबका ख्याल रखने वाली नारी के स्वास्थ्य का शायद कोई भी ख्याल नहीं रखना चाहता। तभी तो हमारे देश में 15 से 19 साल की उम्र वाली 47 फीसदी लड़कियाँ औसत से कम वजन की हैं। आज भी 56 फीसदी लड़कियाँ एनीमिया यानि खून की कमी की शिकार हैं। प्रति वर्ष 6 हजार महिलाएँ बच्चे को जन्म देने के साथ ही मौत के आगोश में चली जाती हैं। देश में हर साल टीबी के कारण एक लाख से ज्यादा महिलाएँ परिवार से अलग कर दी जाती हैं। सामाजिक तौर पर कई इलाकों में आज भी महिलाओं को डायन और चुड़ैल बताकर पत्थरों से मार डाला जाता है, जिन्दा जलाकर सती के नाम पर महिमा मंडित किया जाता है। आम बोलचाल की भाषा में बात–बात पर महिलाओं के अंगों को लानत मलानत लोगों के रोजमर्रा के व्यवहार का हिस्सा है। ऐसे में भला नारी सशक्तीकरण, अशक्तीकरण में क्यों न बदल जाए?

21वीं सदी में जबकि नारी के प्रति विभेद की दीवारें टूटनी चाहिए, शिक्षित समाज द्वारा इस प्रकार का विभेद स्वयं उनकी मानसिकता को कटघरे में खड़ा करता है। आर्थिक आंकड़े बता रहे हैं कि भारत 8–9 प्रतिशत विकास दर के साथ समृद्धि और सम्पन्नता की ओर अग्रसर है, पर क्या इस सम्पन्नता में महिलाओं का योगदान शून्य है? हम प्रायः भूल जाते हैं कि जिन बीजों के सहारे सृष्टि का विकास क्रम अनवरत चलता रहता है यदि उस बीज को प्रस्फुटित ही न होने दें तो सारी सृष्टि ही खतरे में पड़ जायेगी। यह समय है मंथन करने का, विचार करने का कि सृष्टि का अस्तित्व सह–अस्तित्व पर टिका है न कि किसी एक के अस्तित्व पर।

– टाईप–5, निदेशक बंगला जीपीओ कैम्पस, सिविल लाइन्स, इलाहाबाद–211001 (उ. प्र)

घर से दूर होते बुजुर्गों को दें सम्मान, सुधारें अपना कल

– अर्जुनदेव चड्ढा

माता–पिता जो अपनी युवावस्था में अपने बच्चों को सुनहरे भविष्य के लिए स्वयं को भूल कर, जी तोड़ मेहनत कर उन्हें सभी सुख–सुविधाएँ उपलब्ध कराते हैं। उन्हें अच्छी से अच्छी शिक्षा दिलाते हैं और उच्च शिक्षा के पश्चात् वे सन्तानें विदेशों में अथवा देश के महानगरों या बड़े–बड़े शहरों में नौकरी, रोजगार मिल जाने पर उन्हीं माता–पिता को घरा पर अकेला छोड़ देते हैं, हताश एवं एकाकी जीवन जीने के लिए। जिनकी पथराई आंखें हमेशा उनका इंतजार करती रहती हैं।

इसी प्रकार बड़े अरमानों के साथ बेटे का विवाह कर माता–पिता जिस बहू को डोली में बैठाकर लाते हैं। विवाह के कुछ समय बाद वे बेटा–बहू अपनी निजी जिन्दगी में सब कुछ भुलाकर इतना रम जाते हैं कि घर के बुजुर्ग माता–पिता उन्हें भार लगने लगते हैं और फलस्वरूप या तो वे माता–पिता को छोड़कर अलग चले जाते हैं और या फिर उन्हें घर से निकल जाने को मजबूर कर देते हैं।

अति आधुनिक सोच के कारण अतिशिक्षित युवा जिनके घर में वृद्ध माता–पिता हैं, हमेशा अपने पुत्र–पुत्रियों को प्रतिपल चलो होमवर्क करो, इनसे क्या सीखोगे, ये पुराने लोग हैं, अपना काम करो, इत्यादि बातों द्वारा अपने–अपने माता–पिता को हतोत्साहित तथा उनकी उपेक्षा करते नजर आते हैं।

एक ओर सर्वाधिक घातक प्रवृत्ति कि जब तक माता–पिता या बुजुर्ग कमाते हैं, घर का कार्य करने में समर्थ हैं तब तक उनकी बड़ी आवभगत, मान–सम्मान एवं देखभाल और ज्यों ही वे वृद्ध सेवानिवृत्त अर्थात् कार्य करने मे असमर्थ हुए नहीं कि वे माता–पिता सन्तानों को पर्वत से अधिक भारी लगते हैं। फलस्वरूप प्रारम्भ होता है तानों, उलाहनों के माध्यम से प्रतिदिन का अपमान और उनकी सुविधाओं में कटौती का खतरनाक सिलसिला। जिससे उनका जीवन नारकीय बन जाता है।

ये चन्द वे उदाहरण मात्र हैं जो आज के दौर मे हमें अपने चारों ओर वृद्धों के साथ देखने को मिलते हैं। आज के इस भौतिकवादी, आधुनिक बाजारवाद के आधार पर विकसित भोगवादी समाज ने मानवीय संवेदनाओं और पारिवारिक परिस्थितियों पर सर्वाधिक कुठाराघात किया है जिसकी सर्वाधिक मार घर परिवार के बुजुर्गों को सहनी पड़ रही है।

आज अधिकांश घरों में बूढ़े माता–पिता, दादा–दादी को अकेले में अवसादित जीवन व्यतीत करते देखा जा सकता है। आधुनिक सुख–सुविधाओं की चाह, स्वतंत्र जीवन जीने की प्रवृत्ति ने समाज की अमूल्य धरोहर बुजुर्गों को सब कुछ होते हुए भी अनुपयोगी वस्तु (कबाड़) के समान घर में चुपचाप रहने को मजबूर कर दिया है या फिर आवाज उठाने पर घर से बाहर वृद्धाश्रमों का रास्ता दिखा दिया है।

घर या वृद्धाश्रमों में एकाकी रह रहे ये बुजुर्ग शिकार हैं अपनों की उस आधुनिक भौतिकवादी सोच का जो उन्हें समाज में एक अनुपयोगी तत्व मानती हैं। अपने विकास मे बाधक समझती है। वे भूल जाते हैं कि वृद्धावस्था मनुष्य जीवन की एक अवश्यम्भावी प्रवृत्ति है। प्रत्येक को इस स्थिति से गुजरना पड़ेगा। यदि आज का बुजुर्ग दुर्व्यवस्था का शिकार है तो सत्य मानिये वर्तमान के युवा का भविष्य अंधकारमय है।

वृद्धाश्रमों की संख्या में बढ़ोतरी मानवीय संवेदनहीनता का परिणाम है। मनोवैज्ञानिक रिसर्चों ने भी स्पष्ट किया है कि 80 प्रतिशत से भी अधिक वृद्ध वृद्धाश्रम के जीवन से संतुष्ट नहीं होते हैं। पोते–पोती, बेटा–बहू, घर–परिवार के प्रति हार्दिक लगाव उन्हें निरन्तर बेचैनी देता है।

बुजुर्गों को उपेक्षा नहीं सम्मान चाहिए – ये वृद्ध परिवार से धन–दौलत या भौतिक सुविधाओं की चाह नहीं रखते हैं, केवल सम्मान चाहते हैं इनकी चाह इतनी सी है कि उन्हें अपनों का प्यार मिले। परिवार उनके साथ शिष्टाचार का व्यवहार करें। तानों, उलाहनों से अपमानित वचनों से मुक्ति मिले। उन्हें उपेक्षित जीवन जीने के लिए मजबूर नहीं किया जाये।

समझे परिवार की अवधारणा – बुजुर्गों के उपेक्षित जीवन के पीछे परिवार की अवधारणा को ठीक ढंग से नहीं समझ पाना भी एक बड़ा कारण है। आधुनिक पारिवारिक अवधारणा में परिवार नाम केवल पति–पत्नी और उनके बच्चों का है। इसी कारण बेटा, बहू द्वारा जीवन में वृद्ध माता–पिता, सास–ससुर उपेक्षित कर दिए जाते हैं। जबकि परिवार की प्राचीन अवधारणा में पति–पत्नी एवं उनके बच्चों के अतिरिक्त माता–पिता, बुजुर्ग, दादा–दादी का भी समावेश है।

आज आवश्यकता है उस पुरातन धारणा को समझने की। इसे अपनाकर जब परिवार के अभिन्न अंग के रूप में बुजुर्गों को स्वीकार करने लगेंगे तो स्वतः ही इनके प्रति आपके मन में प्रेम स्नेह एवं सम्मान की भावना जन्म लेने लगेगी और वे उपेक्षित बुजुर्ग अपने बन जायेंगे।

संस्कारों के संवाहक हैं बुजुर्ग – घर, परिवार, समाज, राज्य के समृद्धिपूर्ण तथा मानव जीवन निर्माण में संस्कार का बड़ा महत्व होता है। बुजुर्ग ही वे होते हैं जो संस्कार को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं। यदि वे उपेक्षित हैं तो जानिये समाज का नैतिक विकास उपेक्षित है। स्वतंत्रता अधिकार तो वृद्धों की सेवा कर्त्तव्य है – प्रत्येक व्यक्ति स्वतंत्रता चाहता है, अधिकार चाहता है और युवा दम्पत्ति अपने पारिवारिक जीवन में इसी स्वतंत्रता के नाम पर बुजुर्गों की अवहेलना करते हैं, किन्तु व्यक्तिगत स्वार्थपूर्ति का नाम स्वतंत्रता नहीं है। उन्मुक्त जीवन विनाश की ओर ले जाता है। घर परिवार से वृद्धों की उपेक्षा ही का परिणाम है कि आज नवविवाहितों एवं अति शिक्षितों के बीच विवाह विच्छेद की संख्या बढ़ती जा रही है, अतः स्वतंत्रता के साथ घर में बुजुर्गों के महत्व को समझें उनकी सेवा आपका कर्त्तव्य पालन है।

अनुभव का खजाना है वृद्धावस्था

आज समाज में वृद्धों को अनुपयोगी मानने की घातक प्रवृत्ति बढ़ रही है। हम कम्प्यूटर, इंटरनेट से अर्जित ज्ञान को ही सर्वोच्च समझते हैं, किन्तु ऐसा नहीं है कि ये आधुनिक उपकरण आपको नॉलेज तो दे सकते हैं, अनुभव नहीं। जीवन केवल नॉलेज के आधार पर नहीं जिया जा सकता है। इसे जीने के लिए अनुभव की आवश्यकता होती है और ये अनुभव मिलता है बुजुर्गों से। क्योंकि उनके पास जीवनभर का अनुभव होता है तो आपके लिए सदैव उपयोगी है। इतिहास में अनेकों ऐसी कथाएं हैं जो ये बतलाती हैं कि बुजुर्गों के अनुभव किस प्रकार उपयोगी हैं। वृद्धावस्था अनुभवों का इन्साइक्लोपीडिया होती है। इसका फायदा स्वयं उठायें और अपने बच्चों को उठाने दें।

विरासत को न भूलें

आधुनिकता विरासत को भूलने का नाम नहीं है हमारी परम्परा एवं संस्कृति में वृद्धों को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है उनके सम्मान सेवा की बात कही गई है। भारतीय परम्परा में पितृपूजा एवं पित्रेष्टि जैसे यज्ञों का विधान मिलता है जो माता–पिता एवं एवं वृद्धों के प्रति कर्तव्यों का ज्ञापन है। शास्त्रों में कहा गया है कि नित्य प्रति माता–पिता एवं वृद्धों की सेवा एवं सम्मान करने वाले व्यक्ति की आयु, विद्या, यश एवं बल ये चार वस्तुएँ नित्य प्रतिदिन बढ़ती है। मानव विधान के प्रथम निर्माता महर्षि मनु ने तो स्पष्ट लिखा है कि दुखित होकर भी माता–पिता का अपमान नहीं करना चाहिए। इसलिए हमेशा उनका सम्मान करें।

वृद्धावस्था जीवन का वह काल है जिससे एक दिन प्रत्येक युवा को रूबरू होना पड़ेगा। किसी शायर ने कहा है कि जाकर न आने वाली जवानी देखी और आकर न जाने वाला बुढ़ापा देखा। इसलिए यदि आज आप वृद्धों को जैसा व्यवहार या महत्व देंगे उनका सम्मान करेंगे, उनके प्रति सहानुभूति रखेंगे तो मानिये आप अपना कल सुधार रहे हैं। यदि आप आज अपने वृद्धों की उपेक्षा करेंगे तो कल आपके किशोर पुत्र–पुत्रियाँ भी आपकी उपेक्षा करेंगे। हम मनुष्य हैं, केवल मेडिक्लेम पॉलिसी, इंश्योरेंस और पेंशन फण्ड से वृद्धावस्था नहीं गुजारी जा सकती। मानवीय संवेदनाओं की जितना आवश्यकता जीवन की अन्य अवस्थाओं में होती है उससे अधिक वृद्धावस्था में होती है। याद रखें वे केवल प्रेम, स्नेह, सम्मान चाहते हैं। अतः अपने कल को बेहतर रखने के लिए आज वृद्धों को अपनाएँ उन्हें सम्मान दें सेवा करें।

– जिला प्रधान, 4–प–28, विज्ञान नगर कोटा (राज.)

निमन्त्रण–पत्र

।।ओ३म्।।
श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
उदयपुर

२१ वाँ सत्यार्थप्रकाश महोत्सव
दिनांक ६ अक्टूबर से ८ अक्टूबर २०१८

आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी, वानप्रस्थ, उपदेशकों, उपदेशिकाओं, भजनोपदेशकों, भजनोपदेशिकाओं के उद्बोधन–श्रवण का अनुपम लाभ।

कृपया ध्यान दें–
१. उदयपुर रमणीक स्थल है। अतएव यह सत्संग लाभ के अतिरिक्त पर्यटन लाभ का भी अभूतपूर्व अवसर है।
२. अक्टूबर में रात्रि में हलकी सर्दी हो सकती है अतः कृपया ओढ़ने के लिए चादर आदि साथ में लावें।
३. अपने आगमन सम्बन्धी सूचना अग्रिम ही अवश्य भेजें। ताकि आपके आवास तथा भोजन की सुव्यवस्था हो सके।
४. जो सज्जन होटल जैसी विशिष्ट आवास व्यवस्था चाहते हों वे हमें शीघ्र लिखें ताकि होटलों में उनका आरक्षण कराया जा सके। यह व्यवस्था सशुल्क होगी।
सम्पर्क : +919829063110, +919314535379
५. श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80G के अन्तर्गत करमुक्त है। अपना छोटा–बड़ा अर्थ–सहयोग अवश्य दें। चैक या ड्राफ्ट श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर के नाम से ही भेजें।

मान्यवर! आपको विदित ही है कि आर्यजनों द्वारा नवलखा महल, उदयपुर, जहाँ महर्षि देव दयानन्द सरस्वती ने साढ़े छः मास विराजकर, लोक कल्याणार्थ सत्यार्थ प्रकाश जैसे कालजयी ग्रन्थरत्न का प्रणयन सम्पूर्ण किया था, जैसे पवित्र ऐतिहासिक स्थल को उस महामना की स्मृति में एक अन्तर्राष्ट्रीय स्मारक का स्वरूप प्रदान करने का निश्चय किया था, जहाँ से महर्षि दयानन्द की दिव्य विचारधारा का विश्व भर में प्रचार–प्रसार किया जावे।

प्रभु कृपा से व आप सभी के सहयोग से, यह सत्यार्थ प्रकाश भवन आज दर्शनीय व प्रेरक स्थल के रूप में ख्याति प्राप्त है। प्रतिदिन सैकड़ों की संख्या में आने वाले दर्शनार्थीगण, (गत वर्ष ३०००० सहस्र से अधिक) यहाँ से वैदिक विचारधारा का परिचय प्राप्त कर, प्रेरणा ले रहे हैं।

इसी क्रम में इस प्रेरणा स्थल पर प्रतिवर्ष अक्टूबर माह में सत्यार्थ प्रकाश महोत्सव का आयोजन करने का निश्चय किया गया था ताकि इस ऐतिहासिक अवसर पर हम आर्यजन, एक ऐसे स्थल पर, जहाँ कभी ऋषिवर के चरण पड़े थे; उनकी वाणी ने लोगों के दिलों के तारों को झंकृत किया था, एकत्रित हो, करुणा वरुणामय देव दयानन्द के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर सकें तथा विद्वानों के चरणों में बैठ, ऋषि मिशन के अग्र–प्रसारण का संकल्प ले सकें।

आयें, हम जीवन–व्रत लें, मानस बनावें, सहयोग प्रारम्भ करें, ताकि माँ वसुन्धरा की गोद को गौरवान्वित करने वाले, सम्पूर्ण मानवता के हितैषी, उस विषपायी देवता की स्मृति में इस केन्द्र को इतना दर्शनीय और सशक्त बनावें कि एक बार पुनः यहाँ से विश्व वैदिक संस्कृति का पाठ पढ़ सके।

२१वें सत्यार्थप्रकाश महोत्सव में सपरिवार इष्टमित्रों सहित अधिकाधिक संख्या में अवश्य पधारें।

निवेदक
महाशय धर्मपाल (अध्यक्ष) | स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती (न्यासी) | अशोक आर्य (कार्यकारी अध्यक्ष)
डॉ. अमृतलाल तापड़िया (संयुक्त मंत्री एवं संयोजक) | भवानीदास आर्य (मंत्री) | विजय शर्मा (उपाध्यक्ष)
नारायण मित्तल (कोषाध्यक्ष) | श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल (न्यासी) | श्रीमती शारदा गुप्ता (महिला संयोजिका)

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६६४, ०९३१४२३५१०१, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org,
E-mail : satyarthnyas1@gmail.com

Vedic Theory of Trinity

I wanted to lay emphasis on the point, which the other theistic gropus do not accept as truth, and bereft of which theism remains incomplete. That is, if it is accepted, as all other religionists do, that only God is the one eternal entity, that before the creation, nothing but God existed and that God Himself has created this universe, then, so many serious doubts raise their disturbing heads in the hearts of thinking persons that, ultimately, the cloth of theism is reduced to shreds and what Ultimately remain will be atheism and skepticism. Because, if there was none other than God and if He was Infinite, Perfect and Blissfull, what was the need for creation at all? And again, such a creation that there is greater amount of sorrow and sin in it. What really do the greatness and vastness of the God mean, who creates such a defective universe? How Can that God be considered Merciful, who creates first the sinners, affords the opportunities to commit sins, and then tries to show mercy to them?

Some Persian poet has said: Kaar dariya takhtaa band kar layi. Baaz megoi Ki daman tar makun hushi yaar baash". "Oh God! you first threw me bound to a plank into the sea. Now you warn me Look here! Be careful, lest your garments should get wet."

That is to say, you created me, with all my weaknesses and sinful instincts. You created the world permeating with so many temptations. You provided me with ample opportunites to fall a prey to these temptations. But now, you say- "Behold! commit not sin, fall not into the grip of sensual pleasures". This is no condescention at all. That is the reason why an atheist argues that either God is Merciful and weak, He means well by us, but, unable to do us good, Or, the God is cruel, who keeps us involved in some distress or other. But, the atheists, even though they could effectively raise these objections, did not show any way out to solve this riddle. Skepticism or atheism does not show any path to obtain greater solace. The stand of the Arya Samaj and Vedic Dharma bearing on this subject is :-

1. It is wrong to state that there was a time when nothing but God existed.
2. It is wrong to state that God brought into being the Souls and matter out of nothing and created this world all by Himself.
3. It is wrong to state that God is the only eternal Entity.
4. The veda has said: Hiranya Garbhah Samavavtataagre

[Yajur Veda:- 13.4]

Hiranyagarbha was there before. Hiranyagarbha is that God, in whose garbha i.e. interior, the hiranya i.e., the brilliant bodies like the Stars and the Sun ever remain; In Him the effulgent entities like the souls and matter resided. It means that such a God was not there before the creation, except whom, nothing existed; but Hiranya garbha existed the God who was Inclusive of effulgent entities. The souls are eternal and free to act. The souls are not the dolls in the hands of God. He did not create us for playing with. We have ever been eternal entities. But, we were insignificant. For our benefit, for our evolution, He provided us with necessary means. We drive happiness from the proper use of these means and get into grief by their wrong application. God has given us fire. We can use it as an instrument for achieving comfort, or, we can lose our eyes by directing it in an improper manner. God created neither sin, nor sorrow. The very thing that is a cause for sin or sorrow, can as well be a cause for virtue and joy. He, who handed me a sword, did not ask me sever my own head with it. The special feature or beauty of vedic theism lies in the fact that it relieves us from wrong conceptions advanced by theists and atheists and their consequent chaos. The word "Hiranya garbha" appears in the Veda. The Hindu philosophers and preachers were conversant with this word from centuries. But Acharya Shankara and other preceptors gave a new twist to the word under the pretext of monistic theory that, instead of solving the intricate problem, it only helped to worsen the already perplexing entanglement. The Sentence in the Veda is very simple- 'Hiranyagarbha was there, before the creation". Can anyone argue that before the making of the pot, only the potter existed? Definitely not. Besides tile potter, the clay also was there, as well as those for whose sake the pots were to be made. Well, how, then was that Hiranyagarbha? "Bhootasya jaatah patireka aaseet." [Yajurveda:- 13.41. i.e. "He was the sole Protector, Nourisher and doubtlessly Omni- Potent Lord"- the Veda says, Whose Protector and Nourisher was He, if nothing else but God existed?

The potter made the pot? Why? Because, there were people who needed the pot, Similarly, God created the world, for there were those souls who needed it badly. God's mercy needed a definite shape. In simple language, we may put it like this. God knew that the souls needed eyes to see with, and that they were helpless as blind without eyes. He had with him the material cause of the eyes too. He made the eyes and in order to help the eyes see, He created the Sun too. This is mercy. And this is mercy, because in this act of Creation, God had not an iota of Selfish end to achieve. Even staunch theists harbour such a perverted idea of God's eternity In their minds that they get a severe jolt if and when they hear about the theory of this trinity. But, we have to explain the beauty of it to one and all.

- Late shri Ganga Prasad Ji Upadhyaya

योगिराज श्रीकृष्ण जयन्ती समारोह
श्रीकृष्ण ने अधर्म और अन्याय के विनाश का संदेश दिया

धर्म संस्थापक, सुदर्शन चक्रधारी भगवान श्रीकृष्ण ने अधर्म और अन्याय के विनाश का संदेश दिया, उनका विचार तत्त्व प्रवाहमान एवं कालजयी है, उनका जीवन तथा गीता ज्ञान का उपदेश विश्व का अन्धकार दूर करने में सक्षम है उक्त विचार काशी आर्य समाज बुलानाला में आयोजित श्रीकृष्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर संगोष्ठी में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के पुस्ताकध्यक्ष डॉ. जय प्रकाश भारती ने बतौर मुख्य वक्ता व्यक्त किये।

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के उपप्रधान श्री रमाशंकर आर्य ने बतलाया कि आधुनिक युग में भगवान श्रीकृष्ण की महानता व चारित्रिक गौरव का बोध हमें बेदोद्धारक दयानन्द ने कराया।

काशी आर्य विद्वत् परिषद् के अध्यक्ष पं ज्ञान प्रकाश आर्य ने कहा कि चिरंजीवि राष्ट्र की रक्षा करना ही श्रीकृष्ण की प्रेरणा है, उनके संदेश को आत्मसात कर आतंकवाद और अन्याय मुक्त भारत के लक्ष्य को साकार कर सकते हैं।

पूर्व पार्षद् लालाराम सचदेवा ने बतलाया कि श्रीकृष्ण नीति निष्णात् थे, उनके पूर्व पार्षद लीलाराम सचदेवा ने बतलाया कि श्रीकृष्ण आत्मबोध की देसना का अनुपालन कर भारत विश्व गुरु का गौरव प्राप्त कर सकता है।

समारोह के अध्यक्षीय सम्बोधन में श्रीनाथ सिंह पटेल ने कहा कि श्रीकृष्ण जीवन पर आधारित काव्यधारा भक्तिरस का अपूर्व संचार करते हैं।

समारोह के प्रारम्भ में बृहद यज्ञ तथा यजुर्वेद पारायण का समापन श्री मोती लाल आर्य, पं. ज्ञान प्रकाश, रमेश जी आर्य, हेमा आर्या तथा विभा आर्या ने कराया। तदुपरान्त श्री रमेश जी आर्य, लल्लन जी आर्य तथा हेमा आर्या ने मनोहारी भजन एवं गीतों की सराहनीय प्रस्तुति दी।

संगोष्ठी समारोह में अतिथियों का स्वागत डॉ. विशाल सिंह ने किया। संचालन प्रकाश नारायण शास्त्री तथा धन्यवाद प्रकाश विवेक सिंह एडवोकेट ने किया। अन्त में शांति पाठ एस.एन. प्रसाद तथा प्रेमचन्द आर्य ने कराया।

– प्रकाश नारायण शास्त्री, मंत्री काशी आर्य समाज, बुलानाला, वाराणसी–221001, उत्तर प्रदेश

ग्राम–सुरजनवास (महेन्द्रगढ़) में वेद प्रचार की धूम

ग्राम सुरजनवास, जनपद महेन्द्रगढ़ (हरियाणा) में दिनांक 29 अगस्त, 2018 से दिनांक 31 अगस्त, 2018 तक आर्य उत्सव एवं शहीदी दिवस धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर देवयज्ञ (हवन) तीनों दिन किया गया जिसे आचार्य अभयदेव गुरुकुल खानपुर, रेवाड़ी, हरियाणा तथा आचार्या सुकामा देवी प्राचार्या कन्या गुरुकुल रुड़की, हरिद्वार ने सुचारू ढंग से सम्पन्न कराया। सैकड़ों श्रद्धालुओं ने यज्ञ में आहुतियां श्रद्धा पूर्वक डालीं तथा कई व्यक्तियों ने नित्य यज्ञ करने की घोषणा की।

इस उत्सव में पाखण्ड खण्डन, स्त्री शिक्षा, राष्ट्र रक्षा, युवक चरित्र निर्माण, गऊ रक्षा वेद रक्षा गुरुकुलीय शिक्षा सम्मेलन आयोजित किये गये जिनको हजारों व्यक्तियों ने ध्यान पूर्वक सुना तथा वेद पथ पर चलने की प्रतिज्ञा की। इस अवसर पर ग्राम सूरजनवास के वीर शहीद उमराव सिंह, कमल सिंह और मुख्त्यार सिंह को श्रद्धांजलि दी गई। सैकड़ों युवक–युवतियों ने देश धर्महित अपना तन–मन–धन भेंट करने का व्रत धारण किया।

आर्य जगत के प्रख्यात वैदिक विद्वान एवं आर्य कवि पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य भजनोपदेशक ग्राम बहीन, पलवल, हरियाणा ने अपने उद्बोधन में महर्षि दयानन्द को संसार का महान वैदिक विद्वान बताया और उपस्थित जनता से भगवान श्रीरामचन्द्र, श्री कृष्णचन्द्र के पावन जीवन से उच्च चरित्र की शिक्षा लेकर अपना जीवन सुधारने पर विशेष बल दिया। इस उत्सव में आचार्या सुकामा, श्री वैद्य नन्दराम आर्य भजनोपदेशक वैदिक मिसाइल, बलावा कलां, श्रीमती ऊषा आर्या रेवाड़ी, हरियाणा, पं. विजयपाल आर्य जटगांवड़ा, राजस्थान तथा श्री रामअवतार पुरुषार्थी, बिहाली, नारनौल ने भी अपने प्रवचनों भजनों द्वारा वेद प्रचार पर बल दिया। समस्त क्षेत्र में इस उत्सव की सराहना की जा रही है। शांति पाठ के उपरान्त उत्सव का समापन किया गया।

– डॉ. प्रेमराज यादव, महामंत्री, आर्य समाज सुरजनवास, रेवाड़ी, महेन्द्रगढ़, हरियाणा

आर्य समाज खलासी लाईन का 65वां वेद प्रचार सप्ताह सम्पन्न

आर्य समाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में 65वें वेद प्रचार सप्ताह के रात्रिकालीन अंतिम सत्र में समापन दिवस पर वैदिक विद्वानों ने अपने प्रवचनों में कहा – महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने जीवनकाल में अपने लिये कोई घर मकान या आश्रम नहीं बनाया। वो सदैव दूसरों के लिए जीये परमार्थ के लिए जीयें। अग्नि पानी की गन्दगी मलीनता को दूर कर देती है। अग्नि हमें आगे बढ़ा देती है। तत्पश्चात् मुम्बई से पधारे वैदिक भजनोपदेशक वीरेन्द्र मिश्रा जी ने वातावरण को भक्तिमय करते हुए कहा कि अगर हमने बचपन संभाल लिया तो समझो सारी जिन्दगी सम्भाल ली बचपन सम्भालना उतना ही महत्वपूर्ण है जितना पचपन क्योंकि बचपन की आयु में भी भटकने की पूरी–पूरी संभावनाएं होती हैं और पचपन की आयु में भी आप देखते हो कि बड़ी आयु में भी भटकने की पूरी–पूरी संभावनाएं होती हैं। क्योंकि उनका बचपन संयमपूर्ण नहीं होता। उन्होंने भजनों के माध्यम से संयम का संदेश देते हुए कहा कि दिन जिन्दगी के सारे हंसकर गुजारना बचपन संवारना पचपन संवारना।

कार्यक्रम की अध्यक्षता नवादा से पधारे चौधरी रणधीर सिंह जी ने की। मंच संचालन डॉ. पूर्णचन्द्र शास्त्री जी एवं डॉ. राजवीर सिंह वर्मा जी ने किया। डॉ. पूर्णचन्द शस्त्री जी ने आये हुए सभी श्रद्धालुओं का धन्यवाद किया और आभार व्यक्त किया। सभी दानी माहनुभावों का आभार व्यक्त किया तथा सभी का जिन्होंने भी वेद प्रचार सप्ताह में प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से आर्य समाज खलासी लाईन को सहयोग दिया उनका आभार व्यक्त किया और आशा प्रकट की कि भविष्य में भी इसी प्रकार विद्वानों व संन्यासियों का सहयोग मिलता रहेगा। नगर निगम के मेयर श्री संजीव वालिया जी ने भी कार्यक्रम में उपस्थित होकर कार्यक्रम की सराहना की और कहा कि मैं भविष्य में और अधिक सहयोग व समय देने का प्रयास दिया। तत्पश्चात् शांति पाठ एवं प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

मनीषी वेदना

मारे जाओ मारे जाओ तीर अंधेरे में।
कुछ न मिलेगा बहुत देर है अभी सवेरे में।
भीख मांगने देने में होता अन्तर भारी,
बने भिखारी लगे हुए हम तेरे–मेरे में।
हम पट्टाभि रमैया सीता को दुहराते हैं।
फूल–फूल गर्वोन्नत हो तालियाँ बजाते हैं।
पिच्यासी प्रतिशत हम थे संसद में कितने हैं?
करो आत्म चिन्तन आर्यों वेदना सुनाते हैं।
कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का घोष गुंजाते हैं।
भारत तक न रहा अपना यह व्यथा सुनाते हैं।
जलसों में तालियां बजाओ अपने घर जाओ,
वाक् शूर देखे हमने झुनझुना बजाते हैं।
सेवा को अब नाम दे दिया है व्यापारों का।
बैठ किनारे गीत गा रहे हैं मझधारों का।
लड़ना है तो लड़ो दुश्मनों से आपस में क्यों?
सिंहासन सिंहों का होता, नहीं सियारों का।
आत्ममुग्ध होकर सच से अनजान बने बैठे।
त्याग–तपस्या के मद में भगवान बने बैठे।
उठो आर्यों जामवन्त बन तुम्हें जगाता हूँ,
अपनी शक्ति भूलकर क्यों हनुमान बने बैठे?
पाखण्डों की लंका में कब आग लगाओगे?
बढ़े अन्धविश्वास उठो कब धूल चटाओगे?
कुंभकर्ण बन सोये कब से राम जगाता हूँ,
हुआ खत्म बनवास लौट कर कब घर आओगे?
मथुरा अभी कंस कब्जे में यमुना भी मावस की है।
केसर घाटी में कैक्टस है धारा अभी हवस की है।
मंदिर तक तो बना न सकते राम खड़े हैं तंबू में,
काशी विश्वनाथ किसका है कहो अयोध्या किसकी है?

– डॉ. सारस्वत मोहन मनीषी, अन्तर्राष्ट्रीय कवि
मो.:– 9810835335

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ का 52वाँ स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव

आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के 52वें स्थापना दिवस एवं वार्षिकोत्सव के अवसर पर दिनांक 26 सितम्बर से 2 अक्टूबर, 2018 तक ऋग्वेद बृहद यज्ञ एवं निःशुल्क ध्यान योग शिविर का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर आर्य महिला जागृति सम्मेलन, योग सम्मेलन, चरित्र निर्माण सम्मेलन के अतिरिक्त पूज्य आत्मस्वामी जन्मोत्सव एवं आश्रम स्थापना दिवस समारोह का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर विशेष यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य अखिलेश्वर जी रहेंगे। मुख्य वक्ताओं में श्री स्वामी रामानन्द जी, श्री स्वामी सच्चिदानन्द जी, आचार्य चांद सिंह जी, डॉ. मुमुक्षु आर्य जी, आर्य तपस्वी सुखदेव जी के अतिरिक्त कई भजनोपदेशक पधार रहे हैं। **कार्यक्रम** :– प्रातः 5 बजे से 6 बजे तक ध्यान, 6 से 7 बजे तक यौगिक प्रशिक्षण क्रियाओं का प्रशिक्षण और प्रातः 8 से 11 बजे तक तथा सायं 3 से 6 बजे तक यज्ञ भजन उपदेश के कार्यक्रम सम्पन्न होंगे। 2 अक्टूबर, 2018 को यज्ञ की पूर्णाहुति तथा मुख्य कार्यक्रम सम्पन्न होगा।

– राजवीर आर्य संयोजक, मो.:–9811778655

सार्वदेशिक सभा द्वारा चारों दर्शनों एवं संस्कार विधि का पुनर्प्रकाशन

भाष्यकार तर्क शिरोमणि – स्वामी दर्शनानन्द सरस्वती

1. वेदान्त दर्शन – पृष्ठ 232 – मूल्य 100 रुपये
2. वैशेषिक दर्शन – पृष्ठ 248 – मूल्य 100 रुपये
3. न्याय दर्शनम् – पृष्ठ 240 – मूल्य 100 रुपये
4. सांख्य दर्शन – पृष्ठ 156 – मूल्य 80 रुपये
5. संस्कार विधि – पृष्ठ 278 – मूल्य 90 रुपये

बढ़िया कागज, सुन्दर प्रिंटिंग व आकर्षक टाइटल के साथ 25 प्रतिशत छूट पर सभा कार्यालय में उपलब्ध है।

प्रकाशक : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/18-20
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2018-20]

सोशल मीडिया के माधयम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।

ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश+तेलंगाना के तत्वावधान में श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद् का प्रथम अधिवेशन

दिनांक 30 सितम्बर, 2018 प्रातः 9 बजे से

स्थान : श्री नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला नारायण गुडा, सुल्तान बाजार, हैदराबाद

देश के समस्त गुरुकुलों के समादरणीय आचार्यों एवं आचार्याओं से निवेदन है कि अन्तर्राष्ट्रीय गुरुकुल महासम्मेलन हरिद्वार के अवसर पर 'श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्' का गठन किया गया था। परिषद् का प्रथम अधिवेशन 30 सितम्बर, 2018 (रविवार) को श्री नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला नारायण गुडा, सुल्तान बाजार, हैदराबाद में प्रातः 9 बजे से प्रारम्भ होगा। इस सम्बन्ध में प्रो. विठ्ठलराव आर्य जी (हैदराबाद) ने सूचित किया है कि गुरुकुलों के आचार्या एवं आचार्यों के आने–जाने का थर्ड ए.सी. रेल का मार्ग व्यय, आवास, भोजन एवं उचित सम्मान दिया जायेगा। गुरुकुलों की एकरूपता के लिए यह एक आवश्यक महत्त्वपूर्ण प्रयास है। हमें इसमें गुरुकुलों में सैद्धान्तिक शिक्षण के पाठ्यक्रम की एकरूपता के लिए विशेष विमार–विमर्श करना है। गुरुकुल में आने वाली समस्याओं का समाधान, छात्र एवं छात्राओं की प्रतियोगिताएँ, संस्कृत भाषण आदि विविध विषयों पर चर्चा के लिए हम सभी को एकत्रित होना है। समय की न्यूनता को ध्यान में रखते हुए उपरोक्त विषयक अपने विचार एवं सुझाव श्रीमद्दयानन्द वैदिक परिषद् कार्यालय 119, गुरुकुल गौतमनगर, नई दिल्ली–49 के पते पर भेजने का कष्ट करें। (यदि सम्भव हो तो एक प्रति ई–मेल द्वारा – gurukulparishad@gmail.com पर प्रेषित करें।) जिससे इन विषयों पर गम्भीर चिन्तन किया जा सके।

वैदिक धर्म का प्रचार–प्रसार तथा वैदिक सिद्धान्तों की रक्षा हमारा मुख्य उद्देश्य एवं कर्त्तव्य है। आप 29 सितम्बर, 2018 को सायं अथवा 30 सितम्बर, 2018 को प्रातः 8 बजे तक श्री नरेन्द्र भवन, राज मोहल्ला नारायण गुडा, सुल्तान बाजार, हैदराबाद पहुँचने का कष्ट करें। जिससे संगोष्ठी के समय प्रातः 9 बजे आप उपस्थित रह सकें। आप अपने आने–जाने का आरक्षण कराकर ई–मेल द्वारा परिषद् कार्यालय में शीघ्र प्रेषित करें तथा टिकट की छायाप्रति साथ में अवश्य लावें जिससे आयोजकों को व्यय विवरण बनाने में सुविधा रहेगी। (प्रो. विठ्ठलराव आर्य जी का मोबाइल नं.–9849560691 है। आवश्यकता पड़ने पर आपसे सम्पर्क करें।)

सभी को हार्दिक शुभकामनाओं के साथ

– स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती,
अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्

।।ओ३म्।।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की महत्त्वाकांक्षी योजना

घर–घर तक पहुँचाई जायेगी परमात्मा की वेद वाणी

चारों वेदों का सम्पूर्ण हिन्दी भाष्य

लागत मूल्य 4100/- रुपये

(महर्षि दयानन्द, तुलसीराम स्वामी एवं पं. क्षेमकरण दास कृत)

(10 खण्ड, 9 जिल्दों में)

भारी छूट पर उपलब्ध

4100/– रुपये का एक वेद सैट 25 प्रतिशत की छूट पर उपलब्ध है

10 अथवा उससे अधिक वेद सैट लेने पर 30 प्रतिशत की छूट दी जायेगी

प्रत्येक आर्य समाज, स्कूलों के पुस्तकालयों, वाचनालयों तथा प्रत्येक घर में परमात्मा की वाणी वेदों का होना आवश्यक है। अधिक से अधिक संख्या में अग्रिम आदेश भेजकर भारी छूट का लाभ उठायें। डाक व्यय 200/– रुपये अलग से देना होगा। प्रारम्भिक स्तर पर 25 हजार वेद सैट प्रकाशित करने की योजना क्रियान्वित की जायेगी।

अपना आदेश **'सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2 के पते पर अग्रिम भेजकर अपना वेदों का सैट बुक करा सकते हैं।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

प्रो० विठ्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विठ्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।